* चतुर्थ अध्याय *

: चतुर्थ अध्याय :

धर्मवीर भारती के उपन्यासों में चित्रित नारी-जीवन संबंधी समस्याएँ।

आधुनिक भारतीय उत्थान काल में समाज सुधारकों ने अगर किसी समस्या को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तथा गम्भीर रूप में लिया हो तो वह है "नारी-समस्या"। उन्नीसवीं शताब्दी की भारतीय नारी अनेकानेक समस्याओं से जकड़ी हुई है। प्राचीन धर्म-शास्त्रों में भी उसके लिए कम प्रतिबन्ध नहीं थे। उसे किसी भी उम्र में स्वतंत्र रहने की स्वीकृति शास्त्रों ने नहीं दी थी। उसके लिए मनु ने कहा था कि स्त्री को बचपन में माता-पिता के अधीन, जवानी में पति के अधीन तथा बुढ़ापे में लड़के के अधीन रहना पड़ता है। फलतः नारी का जीवन एक अभिशाप बन गया है।

इसी सदी के प्रारंभ से आज तक भारतीय समाज में नारी की स्थिति अत्यंत दयनीय है। जिससे अनेकानेक सामाजिक समस्याएँ तथा बुराइयाँ उत्पन्न हो रही है। निर्जीव पदार्थों के समान क्रय-विक्रय होता है। असमर्थ होने के कारण उसे अत्याचार सहना पड़ता है। समाज में उसका स्थान मात्र भोग्या है।

बीसवीं शताब्दी, "नारी उत्थान युग" माना जाता है। फिर भी आज नारी की स्थिति में काफी परिवर्तन आया है, ऐसी बात नहीं। आज भी उसे दहेज, हत्या, बलात्कार, अपहरण, वैधव्य, परित्यक्ता, परावलंबत्व आदि का सामना करना पड़ता है। समाज में उसका स्थान अत्यंत गिरा हुआ है।

वस्तुतः नारी का स्थान समाज में बहुत ही महत्त्वपूर्ण होना चाहिए। किसी भी समाज की श्रेष्ठता तथा अश्रेष्ठता मुख्यतः इसी बात पर निर्भर होती है कि उस समाज में नारी की स्थिति क्या है। शायद इसीलिए १९ वीं शताब्दी के समाजसुधारकों ने नारी समस्याओं का अधिक खयाल किया होगा। हिन्दी उपन्यासकार भी इसमें पिछे नहीं है। प्रताड़ित नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं को कई उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों का विषय बनाया

है। इनमें से एक है धर्मवीर भारती। उन्होंने भी अपने उपन्यासों में नारी समस्याओं का जिक्र किया है। जो निम्नप्रकार है -

१) प्रेम समस्या :-

प्रेम एक ऐसी समस्या है जिसमें एक ओर मधुरता छिपी है तो दूसरी ओर वेदना। प्रेम की रूची जितनी मीठी होती है, उतनी कडुआहट भी। प्रेम में किसी को सफलता मिलती है तो किसी को असफलता। प्रेमभंग होनेवाले लोगों को अपना जीवन अर्थहीन लगता है। इसलिए वे आत्महत्या करने को भी नहीं ड्रते हैं। प्रेम के कारण सच्चे प्रेमी खुद को मिटाने में भी पिछे नहीं हटते हैं।

मानव सम्बन्धों का महत्वपूर्ण भावात्मक पक्ष प्रेम है। प्रेम की परिभाषा करने की कोशिश सदियों से की जा रही है। वास्तव में प्रेम मानव हृदय की सब से उदात्त और मौलिक भावना है। मानव जीवन की एक अनिवार्य और सशक्त अनुभूति "प्रेमानुभूति" है।

प्रेम के विविध रूप होते हैं। जैसे- आदर्श प्रेम, भावुक प्रेम, वासनाजन्य प्रेम, पागलता से युक्त प्रेम, निरूद्देश्य प्रेम, निस्वार्थ प्रेम आदि।

धर्मवीर भारती के "गुनाहों का देवता" उपन्यास और "सूरज का सातवाँ घोडा" इन दोनों उपन्यासों में प्रायः असफल प्रेमी-युगलों को अंकित किया हैं - इसमें चंदर-सुधा, चंदर-पम्मी, गेसू-अख्तर, लीली-माणिक, सत्ती-माणिक आदि प्रेमी-युगलों का समावेश होता है। इन्हें विश्लेषित किये बगैर धर्मवीर भारती के उपन्यासों में चित्रित प्रेम समस्या का आकलन नहीं होगा।

क) चंदर-सुधा : भावुक प्रेम :-

"गुनाहों का देवता" की सुधा चंदर से जो प्यार करती है वह भावनात्मक है, उनका प्रेम आत्मीय है, जिसमें शारीरिक आकर्षण नहीं है। चंदर से शादी करने की बात वह कभी सोचती भी नहीं। उसे जब पम्मी ने पुछा कि क्या वह चन्दर से प्यार करती

है? तो वह इन्कार करती है क्योंकि वह प्रेम से अपरिचित है, चन्दर से शादी करने का खयाल भी वह पाप मानती है। एक बार सुधा चन्दर से कहती है - "तुमने मुझे जो कुछ दिया है वह प्यार से कहीं ज्यादा उँचा है और प्यार से कहीं ज्यादा महान है।"[१] सुधा चन्दर से दूर रहने पर अपने आपको अपूर्ण महसूस करती है और जब चन्दर उसके सामने शादी की उलझन लाकर खड़ा कर देता है, वह इन्कार करती है मगर चन्दर के आदेशपर ही सुधा कैलाश मिश्र के साथ शादी के लिए तैयार होती है।

सुधा, बस चन्दर की है, जिसके अंतर्मन में सिर्फ चन्दर ही चन्दर है। जिसके प्यार की खातिर एवं इच्छा की खातिर सुधा इस शादी के लिए तैयार हो जाती है। कैलाश से शादी करने का आदेश चन्दर ने सुधा को दिया है, जिसका उल्लंघन करना सुधा के वश के बाहर की बात है।

शादी के बाद सुधा कैलाश को अपना तन तो समर्पित कर देती है परंतु मन चन्दर के प्रति ही लगा रहता है। वह हमेशा चन्दर की फिक्र में ही लगी रहती है। चन्दर के बिना उसे अपना जीवन अधुरा लगता है। वह चन्दर से कहती है - "चन्दर एक बात कहुँ अगर बुरा न मानो तो आज शादी के छः महीने बाद भी मैं यही कहुँगी, चन्दर तुमने अच्छा नहीं किया। मेरी आत्मा सिर्फ तुम्हारे लिए बनी थी, उसके रेशे में वह तत्त्व है, जो तुम्हारी ही पूजा के लिए था। तुमने मुझे दूर फेंक दिया, लेकिन इस दूरी के अंधेरे में भी जन्म-जन्मांतर तक मैं भटकती सिर्फ तुम्ही को ढुंढुंगी, इतना याद रखना और इस बार अगर तुम मिल गये तो जिन्दगी की कोई ताकद, कोई आदर्श, कोई सिद्धान्त, कोई प्रवंचना मुझे तुझसे अलग नहीं कर सकेगी।"[२]

अपने जीवन के अंत तक वह चन्दर से प्यार करती रहती है और अगले जन्म में चंदर से मिलने की प्यास लेकर उसके बाहों में ही अपने जीवन का अंत कर देती है।

ख) <u>गेसू-अख्तर : निरपेक्ष प्रेम</u> :-

"गुनाहों का देवता" की गेसूने अख्तर से प्यार किया और उसने अपने प्यार को शरीर निरपेक्ष रखने का अस्वाभाविक विचार मन में आने तक नहीं दिया। गेसू

के लिए अख्तर क्या है यह बताया नहीं जा सकता। गेसू वह लड़की है, जिसने अपने प्रेमी को दिल की गहराईयों में छिपा रखा था, जिससे शादी करने के लिए वह पागल थी, लेकिन उसके सारे सपने ताश के महल की तरह गिर गये। अख्तर गेसू की छोटी बहन फूल से विवाह करता है, तब गेसू टूट-सी जाती है। इतना सब कुछ होने के बाद भी गेसू के मन में अपने प्रेमी के लिए बदले की भावना नहीं है, नफरत नहीं है। उसके लिए फूल का सुहाग, सुबह की अल्ला की अजान से भी पवित्र है। गेसू नर्स बनकर किसी अस्पताल में सेवा करना चाहती है और आजन्म अपने आपको अविवाहित रखती है।

"गुनाहों का देवता" उपन्यास की भाँति भारतीजी के दूसरे उपन्यास "सूरज का सातवाँ घोडा" में भी प्रेमरस में अमूल-चूल कई युवा-युवतियों के दर्शन होते हैं जिसमें लीली-माणिक, सत्ती-माणिक आदि प्रमुख हैं।

ग) लीली-माणिक : रोमांटिक प्रेम :-

"सूरज का सातवाँ घोडा" की लीली माणिक मुल्ला से प्रेम करती है। जब उसकी तन्ना से सगाई की बात चलती है तो वह माणिक से कहती है - "एक दिन तुम नहीं आते हो तो न खाना अच्छा लगता है, न पढ़ना। फिर महीनों-महीनों तुम्हें नहीं देख पायेंगे।"[3] यहाँ लीली के मन की उलझन दिखाई देती है। इंटर तक पढ़ी हुई लीली का जीवन सम्बन्धी आदर्श रोमांटिकता से ओत-प्रोत हैं, जो अपने पति तन्ना की विपन्न आर्थिक अवस्था से मेल नहीं खाते। अतः वह तन्ना को छोड़कर मैके लौटती है। लीली ने माणिक के साथ अपनी गृहस्थी के रंगीन सपने देखे थे। अनेक आकांक्षाओं के महल सजाये थे। किन्तु उसकी शादी तन्ना से हो जाने पर उसके मन को ठेंस पहुँचती है। गृहस्थी में उसका मन नहीं लगता है। जब किसी बात में मन नहीं लगता है तब उससे सम्बन्धित अच्छी बातें भी बुरी लगती हैं। लीली में अच्छी गृहिणी के लक्षण थे किन्तु तन्ना के साथ उसका मन नहीं लग रहा था। इसलिए तन्ना के साथ-साथ उसकी आर्थिक विपन्नता से भी लीली के मन में नफरत पैदा होती है। लीली अपने स्वप्नों को काँच की तरह टूटते देख इतनी क्रुर और बर्बर बन जाती है कि तन्ना के साथ वह निर्दय से निर्दय व्यवहार करने लगती है। उसे छोड़कर चली जाती है।

घ) <u>सत्ती-माणिक</u> :-

"सूरज का सातवाँ घोडा" की पाँचवी कहानी की नायिका है अशिक्षित किन्तु सुन्दर "सत्ती"। जो कुछ दिनों के संपर्क से माणिक मुल्ला को दिल दे बैठती है। दोनों युवा होने के कारण दोनों के हृदय में प्रेम की भावना जागृत होती है। बुजुर्गों को यह प्रेम बिल्कुल पसंद नहीं है और चमन ठाकूर तथा महेसर दलाल इस वर्ग के प्रतिनिधी बनकर खलनायक का रूप धारण करते हैं। माणिक को अपना जीवन-साथी बनाने के लिए सत्ती हर एक के साथ विद्रोह करने के लिए तैयार है, किन्तु माणिक ड़रपोक और कायर वृत्ति का है। उसकी कायर और ड़रपोक वृत्ति का शिकार बनती है - सत्ती। उसे विवश होकर महेसर दलाल के साथ शेष जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

भारतीजी रोमानी प्रवृत्ति के लेखक हैं। उन्होंने प्रेम और अवैध सम्बन्धों को खुलेआम पाठकों के सामने रखकर प्रेम के विविध पहलुओं का चित्रण कर आदर्श प्रेम की स्थापना की है। भारतीजी ने जितने भी प्रेमप्रकरणों की चर्चा की है वे सारे असफलही हैं क्योंकि चंदर-सुधा, माणिक-सत्ती ये दोनों प्रेम प्रकरण सामाजिक भीरूता के कारण असफल होते हैं। बाकी सभी प्रेम-प्रकरणों के प्रेम में वासना है जिसका नशा क्षणिक होता है। इसलिए सभी असफलही हैं। भारतीजी ने आदर्श प्रेम में त्याग को महत्त्व दिया है।

२) **<u>अनैतिक यौन संबंधों की समस्या</u> :-**

सेक्स मनुष्य में स्वाभाविक रूप में रहता है और इसकी अपूर्ति मन में अनेक प्रकार की कुंठाओं को जन्म देती है। सेक्स एक दूसरे के प्रेम के कारण निर्माण होता है। आजकल अशरीरी अथवा आत्मिक प्रेम प्रायः समाप्त होता जा रहा है। भुख, प्यास की तरह सेक्स भी जीवन की प्रमुख आवश्यकताओं में से एक है। इस तथ्य को आज स्वीकार कर लिया है। नारी की विधवा होने पर या उसका अनमेल विवाह होने के कारण अपनी इस शारीरिक माँग को निरन्तर दबाकर रखना पड़ता है। कई नारीयाँ आज उसे दबाती नहीं उसकी माँग करती है।

समाज में घटित-घटनाओं में कुछ ऐसी घटनाएँ होती है, जिसे समाज मान्य

करता है। जिसमें पवित्रता, शुद्धि आदि भाव होते हैं, उसे नैतिक कहा जाता है। समाज में प्रचलित कई संस्थाओं में "विवाह संस्था" एक है। इसमें पति-पत्नी के शारीरिक सम्बन्धों को समाज की मान्यता है। मगर पति का अपने पत्नी को छोड़कर या पत्नी का अपने पति को छोड़कर किसी दूसरे व्यक्ति से सम्बन्ध प्रस्तापित करना अनैतिकता है।

"गुनाहों का देवता" की पम्मी चन्दर को पाना चाहती है। इसलिए वह वासना से नफरत करने की बात करती हुई चन्दर से दोस्ती करती है। एक स्थान पर पम्मी चन्दर को सेक्स से दूर रहने का इशारा करती है। लेकिन जब चन्दर सुधा को ठुकराता है, तब उसकी उदासी का फायदा उठाकर पम्मी अपने मोहजाल में चन्दर को फाँस लेती है।

पम्मी चन्दर को मित्र बनाती है, उसे आदर्शों की सीख देती है और प्रेमियों में एक निश्चित अलगाव और दूरी को अनिवार्य मानती है। लेकिन इस पम्मी का भीतरी आवरण ऊपरी आवरण से बिल्कुल विपरीत है। उसमें प्यार का आवरण है और उसकी वास्तविकता है वासना की तृप्ति, अपना उल्लु सीधा करने की भावना। वासना का विरोध करनेवाली पम्मी बाद में कहती है - "कपूर, सैक्स इतना बुरा नहीं जितना मैं समझती थी।"[४] ऐसा कहते हुए पम्मी चन्दर के साथ समर्पित होती है।

अपने अनुरूप साथी के चुनाव के लिए बेताब नारी अपने अनुकूल पात्र की खोज में व्याकुल रहती है। वहाँ पूर्ण समर्पण की निष्ठा रखती है। अगर अनुकूल साथी के स्थान पर उसे अनमेल साथी प्राप्त होता है, तब उसे अपनी कामभावना की तृप्ति के लिए पर पुरूष रत होना पड़ता है।

"सूरज का सातवाँ घोडा" की जमुना का ब्याह एक धनी और संपन्न पति से होता है, जो तिहाजू है। इसलिए जमुना की कामभावना अपने पति से तृप्त नहीं हो पाती बल्कि अतृप्त रह जाती है और वह "रामधन" ताँगेवाले से अपनी कामभावना की तृप्ति कर लेती है और इसलिए नैतिक पतन का कारण बनती है।

"गुनाहों का देवता" उपन्यास में बर्टी की पत्नी भी अनैतिकता का शिकार बनी हुई है। अपने पति बर्टी से खटकने के बाद वह एक सार्जेंट से प्यार करती है। उस सार्जेंट से उसे एक बच्ची भी होती है।

"सूरज का सातवाँ घोडा" उपन्यास की बुआ को महेसर दलाल ने अपनी कामभावना पूर्ति के लिए घर में रखा है। इसके बारे में चंद्रभानु सोनवणेजी का कथन है कि - "महेसर दलाल अपने मातृहीन बच्चों के लिए बुआ ले आया है। इस बुआ के लिए खुद "दिन का भैयृया और रात का सैंया" बन जाता है। बाद में विधवा का तन-धन पाकर बहन को घर से निकाल देता है।"[५]

उपन्यासों के पात्र सैक्स के सम्बन्ध में अपनी-अपनी पूर्व धारणाएँ लेकर चलते हैं। जीवन की परिस्थितियों में सामाजिक संघात के फलस्वरूप उनकी धारणाएँ छिन्न-भिन्न हो जाती है। नैतिकता सम्बन्धी उनके स्वतः आरोपित मूल्य उनके लिए संकट की स्थिति पैदा करते हैं। समाज का परंपरावादी और नैतिक दृष्टिकोण, अघुरापन व्यक्तिवादी नारी के स्वतंत्र व्यक्तिवादी की चाह की राह में दीवार बनती है और रूकावट बननेवाली ये नीति की दीवारें तोड़कर कभी-कभी स्वस्थ मार्ग की खोज करनी पड़ती है।

धर्मवीर भारतीजी ने अपने उपन्यासों में स्त्री-पुरूष सम्बन्धों के विभिन्न कोनों को उजागर किया है। भारतीजी प्रेम और सेक्स के अंतर को स्वीकार करते हैं। वे नारी पुरूष की मित्रता में शारीरिक संपर्क अनिवार्य नहीं मानते हैं। सेक्स मानव की मूल प्रवृत्ति है। उसका समाधान भी अनिवार्य है। भारती जी ने इस मामले में परम्परागत नैतिकता को ठेस पहुँचायी है। अतः उनके नारी पात्र उदात्त चरित्र का आदर्श देने के अलावा अपनी वासना तृप्ति की खोज में लगे हुए प्रतित होते हैं।

३) <u>विवाह</u> :-

नारी और पुरूष के जीवन में विवाह एक सुखमय क्षण होता है। पर कुछ लोग इसे व्यवहार के तराजू में तौलने का कार्य करते हैं। तथा विवाह जैसा पवित्र संस्कार भी समस्या बन जाता है। नारी की अनेक समस्याओं में से विवाह एक बहुत बड़ी समस्या है।

भारतीय समाज में विवाह एक प्रतिष्ठित, सामाजिक व्यवस्था स्वीकार की गयी है, किन्तु विवाह संस्था नारी शोषण का साधन बन गयी है। विवाह के कारण ही

नारी को पुरूष के अधीन रहना पड़ता है। विवाह-समस्याओं के अंतर्गत दहेज समस्या, अनमेल विवाह की समस्या, तलाक समस्या आदि कई समस्याएँ आती हैं। धर्मवीर भारतीजी ने अपने उपन्यासों में उक्त सारी समस्याओं का अंकन किया है।

क) दहेज :

कन्या के विवाह के समय दिया गया धन दहेज कहलाता है। यह बहुत पुरानी प्रथा है। प्राचीन काल में हर राजा अपनी पुत्री के विवाह के समय कई हार्थी, घोड़े, दास-दासियाँ सौगात के रूप में देते थे। ऐसा प्रतित होता है कि तब यह प्रथा कुप्रथा न होकर एक निर्दोष हानि रहित रिवाज था। सभी वर्गों के व्यक्ति भी अपनी सामर्थ्य के नुसार कन्यादान के वक्त वस्त्राभूषण, बर्तन, आभूषण आदि सामान भी देते थें। सामर्थ्य के अनुसार स्वेच्छा से दिया गया धन कालांतर में दहेज के रूप में समाज के लिए अभिशाप बन गया है। प्राचीन काल की वधूपिता की स्वेच्छा आज के वरपिता के लिए अनिवार्यता बन गयी है। लड़के का पिता अपने लड़के का मूल्य माँगता है और लड़की के माता-पिता अपना सर्वस्व लुटाकर भी अपनी बेटी का विवाह करना चाहते हैं। इसलिए शादी के क्षेत्र में दहेज एक भयंकर समस्या बनकर रही है। कई लोग शादी तय होने पर शादी के पहले से ही किसी-न-किसी बहाने दहेज माँगते हैं।

"गुनाहों का देवता" उपन्यास में बिनती की सगाई एक लालची तथा नीच प्रवृत्ति के दुबेजी के बेटे से होती है। दुबेजी अपने बेटे का विवाह जल्दी करना चाहते हैं। किंतु लड़कीवाले दहेज इकठ्ठा करने के लिए शादी, गरमियों के दिन में करने के बजाय जाड़े में करना चाहते हैं, पर दुबेजी इसके लिए तैयार नहीं होते हैं। -
"लेकिन बहुत कहने सुनने के बाद अन्त में वे इस शर्त पर राजी हुए कि अगहन तक हर तीज-त्यौहार पर लड़के के लिए कुरता-धोती का कपड़ा और ग्यारह रूपये नजराना जायेगा और अगहन में अगर ब्याह हो रहा है तो सास, ननद और जिठानी के लिए गरम साड़ी जायेगी और जब-जब दुबेजी गंगा नहाने प्रयागराज आयेंगे तो उनका रोचना एक थाल, कपड़े और एक स्वर्णमण्ड़ित जौ से होगा।"६ इस तरह दहेज ऐंठने के तरिके में दुबेजी का

लालचीपन दिखायी देता है। लड़कीवालों को हमेशा लड़केवालों के दबाव में रहना पड़ता है। हर बात लड़केवालों की सुननी पड़ती है। कभी कभी शादी की दहलीज तक पहुँचा हुआ कन्या का ब्याह इस दहेज के कारण ही टूट जाता है।

"गुनाहों का देवता" उपन्यास में दुबेजी के नीच और स्वार्थी स्वभाव के कारण लाठी तक चलने की नौबत आ जाती है। शादी की दहलीज तक पहुँचा हुआ बिनती का विवाह नहीं हो पाता लेकिन बिनती के मुख से अबतक एक भी शब्द नहीं निकलता है, जिससे प्रतीत हो सके कि उसके साथ अन्याय हो रहा है। दुर्भाग्य के कारण बिनती का ब्याह तीन भाँवरों के बाद टूट जाता है।

भारती जी के "सूरज का सातवाँ घोडा" उपन्यास में भी इसी समस्या को उजागर किया है। दहेज न दे पाने के कारण तथा जाति-उपजाति के विष से सींची हुई सामाजिक परम्परा के कारण जमुना का विवाह उसके प्रेमी तन्ना से नहीं होता। - "जमुना के पिता बैंक में साधारण क्लर्क मात्र थे और तनख्वाह से क्या आता जाता था, तीज त्यौहार, मूंड़न-देवकाज में हर साल जमा रकम खर्च करनी पड़ती थी। अतः जैसा हर मध्यम श्रेणी के कुटुम्ब में पिछली लड़ाई में हुआ है, बहुत जल्दी सारा जमा रूपया खर्च हो गया और शादी के लिए कानी कौड़ी नहीं बची।"[७] परिणामतः जमुना का विवाह प्रेमी तन्ना से न होकर एक वृद्ध जमींदार के साथ होता है, जो तिहाजू है। निम्न-मध्य-वर्ग में स्त्री की सामाजिक स्थिति और थोथी मर्यादा एवं रूढ़ियों से ग्रस्त जमुना स्वयं समस्या बन जाती है।

ख) <u>अनमेल विवाह</u> :-

अनमेल विवाह वैवाहिक समस्या का एक महत्त्वपूर्ण कारण है, जो दहेज-प्रथा तथा आर्थिक निर्धनता के कारण समाज में प्रचलित हुआ है। ऐसे विवाहों के कारण अनेक सुकुमारियों के जीवन खिलने से पहले मुरझाते रहे हैं। आर्थिक अभाव से ग्रस्त निराश माता-पिता दहेज के अभाव में कन्या का विवाह अयोग्य पुरूष से करते हैं, तब अनमेल विवाह की निर्मिती होती है। स्त्री जागरण तथा अनेक समाजसुधारकों के प्रयत्नों से अब अनमेल विवाहों में कमी आयी हैं। फिर भी यह समस्या किसी-न-किसी रूप में आज भी वर्तमान है।

"सूरज का सातवाँ घोडा" में जमुना का ब्याह एक वृद्ध जमींदार के साथ होता है, जो तिहाजू है। जमुना का पिता इस विवाह का विरोध करता हुआ कहता है कि लड़का तिहाजू है और मुझसे चार-पाँच बरस छोटा होगा, किन्तु परिस्थिति के आगे उसे झुकना पड़ता है। जमुना की माता उन्हें समझाती हुई कहती है। - "लड़का तिहाजू है तो क्या हुआ। मरद और दीवार - जितना पानी खाते हैं उतना पुख्ता होते हैं।"[८] जमुना परिस्थितियों के आगे सिर झुका देती है। दुर्भाग्यवश जमुना कुछ ही समय के बाद विधवा हो जाती है। रो-धोकर किसी तरह संतोष भी कर लेती है मगर परिस्थिति की दास बन जाती है। अनमेल विवाह की परिणति प्रायः दुःखद ही होती है।

ग) विवाह-विच्छेद :-

भारत में वैधानिक रूप से तलाक को १९५५ ई.में स्वीकृति मिली है। स्त्री-पुरूष दोनों को इसका अधिकार प्राप्त है। हमारे देश में नवीन मूल्यों की स्वीकृति तथा प्रेम-विवाहों में वृद्धी के साथ ही तलाक में भी वृद्धी हुई है। प्रेम-विवाह का साहस करनेवाले तलाक लेने का साहस भी रखते हैं। परम्परागत विवाहों में तलाक की संख्या प्रेम विवाह में हुए तलाकों की संख्या से कम हैं। तलाक ने जहाँ स्त्री-पुरूषों को एक प्रकार की सुविधा प्रदान की है, वहाँ उसके कुछ दुष्परिणाम भी सामने आते हैं। स्त्री-पुरूष में परस्पर सामंजस्य की कमी होने पर एक दूसरे को झेलने के बदले अगर अलग होकर सुखी रहना संभव है तो तलाक एक अच्छी बात है। पर तलाक से परिवार विशृंखलित हो तो उसके परिणाम बूरे ही निकलते हैं।

"गुनाहों का देवता" उपन्यास की प्रमिला डिक्रुज उर्फ पम्मी एक तलाक शुदा औरत है, वह अपने तलाक के बाद साल भर तक घर से बाहर नहीं निकलती है। वह अपने आपको चार दीवारों में बंद कर लेती है, केवल समाज के भय से। तलाक के कारण वह घर में उब जाती है और अपनी सिगरेट की आदत के बारे में चन्दर को बताती हुई कहती है - "मेरी तो मजबूरी है मिस्टर कपूर, मैं यहाँ के समाज में मिलती-जुलती नहीं, अपने विवाह और अपने तलाक के बाद मुझे ऐङ्‌लो-इण्डियन समाज से नफरत हो गयी है। मैं अपने दिल से हिन्दोस्तानी हूँ। लेकिन हिन्दोस्तानियों से घुलना-मिलना हमारे

लिए सम्भव नहीं। घर में अकेले रहती हूँ। सिगरेट और चाय से तबीयत बदल जाती है।"[९] तलाक के बाद पम्मी किसी से अगर बातें करती है, तो कुछ लोग उसपर हँसते हैं, कुछ लोग उसे सभ्य समाज के लायक नहीं समझते तो कुछ लोग उसका गलत मतलब निकालते हैं। इसलिए पम्मीने अपने आपको बँगले में ही कैद कर लिया है।

धर्मवीर भारती विवाह को एक व्यवहारिक आवश्यकता के रूप में देखते हैं। जीवन की अन्य आवश्यकताओं की भाँति काम तथा प्रेम भी जीवन की आवश्यकता है, बल्कि यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात है। "स्त्री" हो या "पुरूष" दोनों के लिए लैंगिक भावनाओं की तृप्ती अनिवार्य है। इसलिए विवाह जैसी पवित्र संस्था का निर्माण किया गया है। स्त्री-पुरूष पति-पत्नी के रूप में ही इन भावनाओं की तृप्ती कर सकते हैं और जब पति-पत्नी के अतिरिक्त या पत्नी-पति के अतिरिक्त व्यक्ति से कामसम्बन्धों की स्थापना करते हैं तब वह सम्बन्ध, अवैध सम्बन्ध माने जाते हैं, जो समस्या के रूप में उभर आते हैं कारण ऐसे सम्बन्ध निषिद्‌ध हैं। भले ही स्त्री कुँवारी हो, परित्यक्ता हो या विधवा। उसके द्‌वारा स्थापित कामसंबंध टीका का विषय बनता है।

४) वैधव्य :-

भारतीय समाज जीवन के दो प्रमुख कलंक है अछूत प्रथा और हिन्दु विधवा। व्यक्तित्वहीन नारी हमेशा समाज द्‌वारा लुटी गयी है। स्त्री को अपने विकास और जीवन-सुख का अधिकार समाज ने कभी नहीं दिया है। समाज में यह मान्यता दृढ़ रही है कि जिस प्रकार बेल के लिए वृक्ष का आधार आवश्यक है उसी प्रकार नारी के लिए पुरूष का आधार अनिवार्य है। पुरूष की छाया ने नारी के विकास के समस्त रास्ते अवरूद्ध कर दिए हैं। पुरूष पत्नी की मृत्यु के बाद दूसरा विवाह कर सकता है, पर नारी को यह अधिकार नहीं है।

"वैधव्य" नारी जीवन का सबसे बड़ा कलंक है। पति के न होने से वह समाजद्‌वारा दुत्कारी जाती है। समाज का संस्कारी, संदेहवाही मन नारी प्रेम की गम्भीरता को, उसकी भावना को समझ नहीं पाता। कभी कभी नारी के पारिवारिक लाचारी का फायदा

उठाकर उसे अयोग्य व्यक्ति के गले बाँध दिया जाता है। परिणामस्वरूप उसे वैधव्य का जीवन स्वीकारना पड़ता है।

धर्मवीर भारती का "सूरज का सातवाँ घोडा" उपन्यास में दहेज के अभाव मे जमुना का ब्याह एक वृद्ध जमींदार के साथ होता है। जमुना के इस विवाह को जमुना का पिता विरोध करता है परंतु अंत में उसे परिस्थितिवश मानना पड़ता है। जमुना भी परिस्थिति के सामने अपना सिर झुका देती है। परंतु वृद्ध जमींदार का साथ भी उसकी नसीब में नहीं रहता। कुछ दिन के पश्चात जमुना विधवा हो जाती है और अपनी कामवासना की पुर्ति के लिए जमुना रामधन ताँगेवाले को पनाह देती है और समाज के ताने सहने के लिए विवश होती है।

वैधव्य के कारण नारी अपने आप मनोरूग्ण बनती जाती है। बच्चे के जन्म के बाद पति के मर जाने की वजह से वह अपने वैधव्य का कारण संतान को मानकर उसे जिंदगी भर कोसती रहती है।

"गुनाहों का देवता" उपन्यास में डॉ.शुक्ला की बहन और सुधा की बुआ जो विधवा है, अपनी बेटी बिनती पर अपने वैधव्य का लांछन लगाती है और उसे गालियाँ देकर संतोष पाती है। बुआ बिनती को बहुत डाँटती-फटकारती है। किसी-न-किसी बात का गुस्सा अपनी बेटी पर बार-बार उतारती है और कहती है - "पैदा करत बखत बहुत अच्छा लाग रहा, पालत बखत टें बोल गये। मर गये रहयो तो आपन सन्तानौं अपने साथ लै जात्यौं। हमारे मूड़ पर ई हत्या काहे ड़ाल गयौ। ऐसी कुलच्छनी है कि पैदा होतेहिन बाप को खाय गयी। "[१०]

पति के अभाव में नारी की मानसिक स्थिति संघर्षमय रहती है। यह अभाव उसके जीवन की भयंकर रिक्तता है इस रिक्तता को भर पाने का कोई मार्ग न मिलने पर वह चिड़चिड़ी बन जाती है?

५) <u>अन्य समस्याएँ</u> :-

समाज में ऐसी भी कुछ प्रथा, परम्परायें, धारणाएँ विश्वास प्रचलित होते हैं, जिनका नारी-जीवन पर प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव होता रहता है। ऐसे कुछ उपादानों का अंकन भारती जी के उपन्यासों में हुआ है जिसमें जाति-बिरादरी, नारी शिक्षा एवं स्वतंत्रता, पारिवारिक विघटन, अंधविश्वास आदि प्रमुख हैं। ये बाते भी नारी-जीवन के लिए समस्या बनकर आयी हैं अतः इनका अध्ययन भी यहाँ अनिवार्य है

क) <u>जाति-बिरादरी की समस्या</u> :-

नारी जीवन और नारी समस्या सामाजिक असंगतियों एवं वैषम्योंका प्रतिफलन है। भारतीय जनजीवनपर परम्परा, धर्म, आदर्श आदि का गहरा प्रभाव है। भारतीय समाज-व्यवस्था में आज भी इतना कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ है।

वास्तवमें जीवन का सुख स्त्री-पुरूष के हार्दिक मिलन एवं व्यक्तित्व के स्वतंत्र विकास पर निर्भर है, किंतु स्त्री को अपने विकास का कभी भी अवसर प्राप्त नहीं होता है। अपनी पसंद के युवक को न पाने से उसका जीवन हमेशा अतृप्ति से भरा रहता है।

"गुनाहों का देवता" में विवाह के मूल-भाव पर कुठाराघात किया गया है। डॉ.शुक्ला जात, धर्म माननेवाले थे। उनका कहना है कि - "ब्याह-शादी को कम-से-कम मैं भावना की दृष्टि से नहीं देखता। यह एक सामाजिक तथ्य है और उसी दृष्टिकोण से हमें देखना चाहिए। शादी में सबसे बड़ी बात होती है सांस्कृतिक समानता। और जब अलग-अलग जाति में अलग-अलग रीति-रिवाजें है तो एक जाति की लड़की दूसरी जाति में जाकर कभी भी अपने को ठीक से संतुलित नहीं कर सकती और फिर एक बनिया की व्यापारिक प्रवृत्तियों की लड़की और एक ब्राम्हण का अध्ययन वृत्ति का लड़का, इनकी सन्तान न इधर विकास कर सकती है न उधर। यह तो सामाजिक व्यवस्था को व्यर्थ के लिए असन्तुलित करना हुआ।"[११]

इस तरह की दृष्टि, विचार मन में रखने के कारण सुधा जैसी नारियों के साथ डा.शुक्ला जैसे जाति-बिरादरीवालों ने खिलवाड़ किया है। चंदर और सुधा एक-दुसरे को चाहकर भी शादी-ब्याह का विचार तक मन में आने नहीं देते हैं। केवल इस जाति-बिरादरी के कारण सुधा जैसी पवित्र नारी का वैवाहिक जीवन मधुर नहीं बनता है तथा उसे बिमारी भी लग जाती है। उसी में उसकी मौत होती है।

"सूरज का सातवाँ घोडा" की जमुना और तन्ना एक ही बिरादरी के थे। तन्ना जमुना के गोत से थोडा निचले गोत का था। - "जमुना का खानदान सारी बिरादरी में खरे और ऊँचे होने के लिए प्रख्यात था।"[१२] जाति-उपजाति के विष से सींची हुअी सामाजिक परम्परा के कारण जमुना का विवाह उसके प्रेमी तन्ना से न होकर वृद्ध जमींदार के साथ होता है, जो तिहाजू है। जाति प्रथा के कारण जमुना के भाग्य में वैधव्य आता है और वह समाज के लिए भीषण समस्या बन जाती है।

यह भी कितना विड्म्बनापूर्ण अज्ञान है कि व्यक्ति अपनी जाति के अलावा अन्य जाति के पुरूष से बेटी का विवाह नहीं कर पाता, चाहे वह कितना भी प्रिय और योग्य हो। लोग प्रायः जाति के ही पुरूष से बेटि का विवाह करना चाहते हैं, चाहे वह कितना भी अयोग्य हो। वर के यह परिमाण गलत हैं। वर की योग्यता की अपेक्षा जाति की योग्यता की ओर अधिक ध्यान देने के कारण ही नारी जाति पर अन्याय होता है, उसका जीवन बरबाद किया जाता है। इस तरह जाति-बिरादरी के बंधन भी कभी-कभी नारी के लिए विष बन जाते हैं।

धर्मवीर भारती उपन्यास के प्रारंभ में शुक्ला के माध्यम से जाति-बिरादरी के बंधनों को मानते हैं, लेकिन बाद में शुक्लाद्वाराही जाति-बिरादरी का विरोध करते हुए दिखायी देते हैं।

ख) नारी : शिक्षा और स्वतंत्रता की समस्या :-

बीसवीं सदी के प्रारंभ और १९वीं सदी के अंतिम दिनों में नारी सुधार सम्बन्धी जो आंदोलन हुए, उनमें नारी शिक्षा तथा उसकी स्वतंत्रता पर प्रायः प्रत्येक जगह

विचार किया गया है। सनातनी लोग लड़कियों का स्कूल जाना स्वीकार नहीं करते थे। वे घर के अंदर ही औरतों के प्रारम्भिक तथा घेरेलु शिक्षा के पक्ष में थे। समाज में जाति-बिरादरी के ड़र से लड़की का जल्दी ब्याह किया जाता है, जिसके कारण नारी को शिक्षा से दूर रहना पड़ता है। माता-पिता केवल शादी की बात सोचते हैं या तो उन्हें बोझ से मुक्त होने की जल्दी होती है या नाक कट जाने का ड़र। इस सनातनी भावना से नारी की भावनाओं का गला घोंट दिया जाता है।

स्त्री-शिक्षा की शुरूआत होने पर नारी की प्रगति होने लगी है। स्त्री-शिक्षा की इस प्रगति का प्रभाव यह हुआ कि नारी-जाति ने अपने अधिकारों को पहचाना है। वे आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र तथा स्वावलंबी होने लगी है। वह पुरूष की दासी न बनकर अर्धांगिनी बनी है। शिक्षा की वजह से नारी को पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त होते जा रहे हैं।

"गुनाहों का देवता" में सुधा का ब्याह एक अच्छे परिवार में तय हो जाने के कारण डा.शुक्ला अपनी बेटी का ब्याह जल्दी करना चाहते हैं। सुधा की इच्छा पढ़ने की है फिर भी घरवालों के आगे उसकी कुछ नहीं चलती है। वह रोती-सिसकती कहती है - "लेकिन इतनी जल्दी क्या है? अभी मुझे पढ़ लेने दो।"[१३] "गुनाहों का देवता" में बिनती का ब्याह तय होता है और दहेज के कारण ब्याह टूट जाता है। ब्याह टूटने के बाद डा.शुक्ला उसे और आगे पढ़ाना चाहते हैं, मगर बिनती की माँ उसे पढ़ाने से इन्कार करती है। उसे ड़र है कि लड़की पढ़कर बिगड़ न जाये। अतः लड़की की पढ़ाई उनके लिए आपत्ती लगती है। इसलिए वह कहती है - "अब तुम लोगन की सकल न देखबै। हम मर जाई तो चाहे बिनती को पढ़ायो, चाहे नचाओ, गवायो। हम अपनी आँख से न देख बै।"[१४]

"सूरज का सातवाँ घोडा" में जमुना मध्यवर्गीया युवती है। पिता बैंक में साधारण क्लर्क होने के कारण उसके घर की आर्थिक परिस्थिति सदृढ़ नहीं है। वह अभावों का घर है। इसलिए जमुना का शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध भी उचित रूप में नहीं होता है।

माणिक मुल्ला एक बार जमुना को स्कूल के बारे में पुछते भी है। तब वह कहती है - - "स्कूल? स्कूल जाना तो माँ ने चार साल से छुड़ा दिया। घर में बैठी या तो कहानियाँ पढ़ती हूँ या तो सोती हूँ।"[१५]

इसतरह घरवालों के दबाव में नारी को शिक्षा से दूर रखा जाता है। भारतीय समाज में लड़के की शिक्षा अनिवार्य मानी जाती है किन्तु लड़की की शिक्षा को महत्त्व नहीं दिया जाता है। उसे पराये घर का धन मानकर शिक्षा से दूर किया जाता है। इस अवस्था में अगर अर्थ का अभाव हो तो नारी-शिक्षा और भी समस्याप्रद बन जाती है। इस अवस्था में शिक्षा ग्रहण करना चाहनेवाली लड़कियों की दमघुट होती है। "गुनाहों का देवता" की बिनती, "सूरज का सातवाँ घोडा" की जमुना इसके उदाहरण है।

उस काल में लड़कियो का युनिव्हर्सिटी में पढ़ाई के लिए जाना बुरा माना जाता था। इसके बारे में गेसू कहती है - "असल बात तो यह है कि कॉलेज में पढ़ाई हो तो घर में पढ़ने में मन लगे और राजा कॉलेज में पढ़ाई नहीं होती। इससे अच्छा सीधे युनिव्हर्सिटी में बी.ए.करते तो अच्छा था। मेरी तो अम्मी ने कहा कि, वहाँ लड़के पढ़ते हैं। वहाँ नहीं भेजूँगी।"[१६] प्रायः लोग ऐसा मानते हैं कि स्त्री-पुरूषों के संपर्क में रहने पर वह बरबाद होने की संभावना निश्चित है। इसलिए सयानी लड़कियों को पुरूषों के संपर्क से दूर रखा जाता है। युनिव्हर्सिटी में जब लड़कियाँ युवा लड़कों के साथ शिक्षा ग्रहण करेगी तब आपसी संपर्क से लड़कियों के पैर फिसलने का ड़र माता-पिता को लगता है। इसलिए लड़कियों को युनिव्हर्सिटी शिक्षा से वंचित किया जाता था। तात्पर्य हमेशा धरवाले बेटी की इज्जत का खयाल करते हैं। बेटी की इज्जत के साथ माता-पिता की इज्जत भी मिट्टी में मिल जाती है। इसलिए ऐसी आपत्तियों का सामना न करना पड़े इसलिए माता-पिता सतर्क रहते हैं तथापि माता-पिता की यह सतर्कता नारी शिक्षा के लिए घातक बनती है। इस तरह नारी को किसी न किसी बहाने शिक्षा नहीं मिलती और इसी वजह से नारी के जीवन में वह एक समस्या बनती है।

उस काल में नारी कितनी भी पढ़ी लिखी हो। उसके विचारों को स्थान

नहीं था। उसे समाज के रूढ़ीयों, नीति-नियमों को स्वीकार करना पड़ता था। इस प्रकार शिक्षा मिलनेपर भी लड़कियाँ स्वतंत्र नहीं थी। उस युग की नारी शिक्षा और स्वतंत्रता की स्थिति का वास्तविक चित्रण धर्मवीर भारती जी ने किया है - इस उपन्यास की सुधा पढ़ी लिखी होने पर भी विवाह का निर्णय स्वयं नहीं ले सकती है।

ग) <u>पारिवारिक विघटन</u> :-

परिवार एक मौलिक सामाजिक संस्था है। पारिवारिक संगठन के लिए परिवार में रहनेवाले लोगों में उद्देश्यों की व्यक्तिगत आकांक्षाओं की ओर अभिरूचियों की एकता होनी चाहिए। इनके अभाव में परिवारों में कलह होने लगते हैं, लड़ाई-झगड़े होने लगते हैं और परिवार टूटने लगते हैं। परिवार विघटन के बारे में शैल रस्तोगी कहते हैं कि - "दोनों पीढ़ियाँ ही नासमझी से काम लेती है। बड़ी-बुढ़ियों को सोचना चाहिए कि अब पुराना युग बीत गया। नये युग के आवर्तन में पुरानी बातें नहीं निभ सकती इसके विपरित नई पीढ़ी के साथ समझौता करने को तैयार नहीं। इस वजह से परिवार में संघर्ष होते हैं।"[१७]

पारिवारिक जीवन का प्रमुख दाम्पत्य जीवन है। पति-पत्नी के आपसी संघर्षो के अनेक कारण होते हैं। जैसे पति-उपेक्षा, अधिकार-भावना, अविश्वास, कलह-व्यवहार, पुराने और नये विचारों का संघर्ष, स्त्री को समझने की कमी और पतिव्रत का एकांगी आदर्श इन्ही कारणों की वजह से पारिवारिक विघटन हो सकता है।

नारी जिसे चाहती है उसे वह प्यार करती है उसे ही पाना चाहती है अगर उसके जीवन में वह प्राप्त नहीं होता है तो वह जिंदगीभर दुःखी होती है। "गुनाहों का देवता" में सुधा और कैलाश का दाम्पत्य जीवन आनंदमय नहीं है। सुधा परिस्थितियों से समझौता करना नहीं जानती। वह विवाह के पूर्व से ही चन्दर से प्यार करती है। सुधा कैलाश के साथ शादी करती है वह भी अपने प्रेमी चन्दर के कहने के अनुसार और अपने पिता डा.शुक्ला के सम्मान के लिए। चंदर से वह प्यार करती है। चंदर की याद उसके अंग अंग में व्याप्त रहती है। जब कैलाश उसे स्पर्श करता है तो उसका हृदय घृणा से भर जाता है। वस्तुतः कैलाश में क्या कमी थी जो सुधा को उसमें कीड़े दृष्टिगोचर होते

है? सुधा अपने वैवाहिक जीवन से असंतुष्ट है क्योंकि वह चन्दर को चाहती है। स्वयं कैलाश अपने दाम्पत्य जीवनविषयक कहता है - "न इसमें मेरा कसूर है न इनका। मैं चाहता था कोई लड़की जो मेरे साथ राजनीति का काम करती, मेरी सबलता और दुर्बलता दोनों की संगिनी होती। इसीलिए इतनी पढ़ी-लिखी लड़की से शादी की। लेकिन इन्हें धर्म और साहित्य से जितनी रूची है उतनी राजनीति से नहीं। इसीलिए मेरे व्यक्तित्व को ग्रहण भी नहीं कर पायी। वैसे मेरी शारीरिक प्यास को इन्होंने चाहे समर्पण किया, वह भी एक बेमानी से, उससे तन की प्यास बुझ जाती हो, लेकिन मन तो प्यासा ही रहता है।"१८ सुधा का शरीर कैलाश के साथ और मन चन्दर के साथ चिपका रहा है। इस दोहरी अवस्था में ही वह घूट-घूट कर मर जाती है। स्पष्ट है कि "प्रेम एक से और शादी दूसरे से" ऐसी स्थिति हो तो पारिवारिक विघटन की संभावना रहती है।

पारिवारिक विघटन आजकल की भयंकर समस्या है। पारिवारिक विघटन का सबसे ज्यादा नारी जीवन पर गहरा असर होता है। दाम्पत्य जीवन में एक दूसरे को समझ लेना, एक-दूसरे का विश्वास प्राप्त करना अनिवार्य है। पति अगर पत्नी को केवल वासनातृप्ति के साधन के रूप में देखता है तो पारिवारिक जीवन धोके में आता है और तलाक जैसी पारिवारिक विघटन की स्थिति निर्माण होती है। "गुनाहों का देवता" की पम्मी शादी-शुदा औरत है परंतु उसने अपने पति को तलाक दिया जो उसे सिर्फ वासनात्मक दृष्टि से देखता था। इसलिए अपने पति से यौन सम्बन्ध रखना पम्मी के लिए एक समस्या बनी थी। इस तरह के विवाहित जीवन के वासनात्मक पहलु से घबड़ा कर वह तलाक देती है। तलाक देने के पश्चात वह दूसरा विवाह नहीं करना चाहती है। उसे विवाह से सख्त नफरत हो जाती है। वह कहती है - "मैं सोच रही हूँ अगर यह विवाह-संस्था हट जाये तो कितना अच्छा हो। पुरूष और नारी में मित्रता हो। बौद्धिक मित्रता और दिल की हमदर्दी। यह नहीं कि आदमी औरत को वासना की प्यास बुझाने का प्याला समझे और औरत आदमी को अपना मालिक। असल में बँधने के बाद ही पता नहीं क्यों सम्बन्धों में विकृति आ जाती है। मै तो देखती हूँ कि प्रणय-विवाह भी होते हैं तो वह असफल हो जाते हैं क्योंकि विवाह पहले आदमी औरत को उँची निगाह से देखता है, हमदर्दी और प्यार की चीज समझता

है और विवाह के बाद सिर्फ वासना की। मैं तो प्रेम में भी विवाह-पक्ष में नहीं हूँ और प्रेम में भी वासना का विरोध करती हूँ। "[१९] तलाक देने के बाद वह इसलिए दूसरा विवाह नहीं करती है।

"गुनाहों के देवता" में बर्टी की पत्नी और बर्टी में छोटी सी बात पर झगड़ा हो जाता है और उस दिन से उन दोनों में खटकती है तो फिर कभी भी नहीं बनती है। परिणाम यह होता है कि बर्टी की पत्नी एक सार्जेण्ट के साथ इश्क करती है। लेकिन इस बात का पता बर्टी को लगने पर भी बर्टी न तलाक देता है, न उसे कुछ कहता है। बर्टी की पत्नी सार्जेण्ट के साथ प्यार जारी रखती है, जिससे उसे एक पुत्री होती है और पुत्री का जन्म होते ही बर्टी की पत्नी मर जाती है।

अपने भावी जीवन के बारे में नारी की भी कुछ इच्छाएँ होती है, कुछ सपने होते है। उसके ये सपने अधुरे रह जाये तो पारिवारिक विघटन होने की सम्भावना होती है। "सूरज का सातवाँ घोडा" के तन्ना का विवाह लीली नामक लड़की से होता है। लीली ज्यादा पढ़ी है, ज्यादा धनी है, ज्यादा रूपवती है। इसलिए हमेशा ताने दिया करती है। तन्ना की गरीबी के कारण तन्ना के दुःखों की जीवनसाथी बनकर नहीं रहना चाहती है। एक दिन लीली की माँ अपनी बेटी को ले जाती है क्योंकि गरीबी के कारण तन्ना के घर की हालत बेकार हो जाती है। इसके अलावा तन्ना के विचित्र व्यवहार से भी वह तंग आ जाती है इसलिए वह अपनी बेटी तन्ना के पास नहीं रखना चाहती है। बेटी को वापस ले जाते समय वह कहती है - "जब कमर में बूता नहीं था तो भाँवरे क्यों फिरायी थी और फिर युनियन-फूनियन के गुण्ड़े आवारे आकर घर में हुड़दंग मचाते रहते हैं, तन्ना की बहने उनके सामने चाहे निकले चाहे नाचे-गायें, उनकी लड़की यह पेशा नहीं कर सकती। "[२०] ऐसा कहकर वह अपने बेटी को मैके ले जाती है।

पारिवारिक जीवन की सरलता, जटिलता में परिवर्तित हो गयी है। व्यक्तिगत परिवारों में नारी-पुरूष के बनते-बिगड़ते सम्बन्धों के बीच समाज का जैसे नाम ही मिट गया है। विवाह समस्या, यौन पवित्रता की समस्या जैसे समस्याओं के साथ नारी ने अपनी आर्थिक

पराधीनता के विरूद्ध अपने पाँव बढ़ाये हैं। इसी समस्याओं की जटिलता ने नारी को भी एक समस्या बना दिया है।

प्रेमविवाह भी सफल हो, यह आवश्यक नहीं, क्योंकि पम्मी का ऐसा अनुभव है, जो दाम्पत्य-जीवन में वासना को कोई स्थान नहीं देती है। सुधा पति से घृणा करती है, कयोंकि प्रेम चन्दर से करती है। "सूरज का सातवाँ घोडा" की जमुना अभावों में पली है जो बुढे जमींदार से शादी करके प्रसन्न होती है और रामधन के साथ अनैतिक सम्बन्ध रखती है। लीली बड़े घर की बेटी है जो अपने गरीब पति के साथ प्रसन्न नहीं रहती इसलिए वह जल्दीही पति को छोड़कर चली जाती है। अभावों में ग्रस्त मध्यवर्गीय परिवारें में अनैतिकता का बोलबाला रहा है। इसप्रकार भारतीजी ने अपने उपन्यासों में पारिवारिक विघटन की कई स्थितियाँ उभारी हैं। जो नारी जीवन की समस्या बनकर उभर आती है।

घ) अंधश्रद्धा :-

व्रत, पुजा, पाठ, सिद्धि-साधना ये सब बातें मन की इच्छापूर्ति तथा पावनता के लिए की जाती हैं। जो पूरी करने से पाप, मन का मैल, पशु-वृत्ति नष्ट होती है ऐसा माना जाता है। मन की प्रसन्नता के लिए हम ईश्वर की भक्ति करते है, जो एक श्रद्धा है लेकिन इसका इतना आड़म्बर हो गया है कि जिससे अंधश्रद्धाओं को बढ़ावा मिलता है और वे सामाजिक जीवन की समस्या बनकर खड़े होते हैं।

"गुनाहों का देवता" की बुआ व्रत, पुजा-पाठ आदि बातों पर विश्वास करती है। वह , पूजा-पाठ के पहले किसी को छुती तक नहीं, न ही वह पूजा की जगह किसी को आने देती। लखनऊ से आया हुआ चन्दर जब बुआ से प्रणाम करता है और पैर छुने के लिए झुकता है तो वह उसे रोकने के लिए तीन कदम पीछे हटती हुई कहती है - "देखत्यौं नै हम पूजा की धोती पहने हैं।"[२१] चन्दर के हट जाने से बुआ हाथ के पंचपात्र से वहाँ पानी छिड़ककर मीन फूँकती है। इसी अंधविश्वास के कारण नारी स्वयं पिछे पड़ती है और अंधविश्वास जैसी समस्या बनती है।

शगुन-अपशगुन की बातें प्राचीन काल से ही चली आ रही है। आधुनिक काल में भी मानव समाज में कई तरह के शगुन-अपशगुन माने जाते हैं। आज की नारी इक्कीसवीं सदी की ओर बढ़ रही है तथापि शगुन-अपशगुनों को मानने की मात्रा अब भी कम नहीं हो पायी है।

"गुनाहों का देवता" की बुआ अपनी बेटी के जन्म को पति की मृत्यु का कारण मानती है और उसे बार-बार कोंसती है। उसे लगता है कि अपनी बेटी का जन्म एक अपशगुन है जिसकी वजह से उसके पति की मृत्यु हो जाती है। बुआ का यह अंधभाव बिनती के जीवन का अभिशाप बन जाता है। अतः यह एक समस्या ही है।

मातृत्व ही नारीजीवन की सार्थकता है। मातृत्व प्राप्ति के मार्गों में जब कसूर दिखायी देती है तब उसकी पूर्ति के लिए अस्वाभाविक मार्गों का अवलम्ब किया जाता है। इनमें धार्मिक आड़म्बरों का भी आधार लिया जाता है। भगवान की प्रार्थना की जाती है, मनौतियाँ मनायी जाती हैं। मंत्र, जाप, ज्योतिषियों का भी सहारा ढूँढ़ा जाता है। सन्तान प्राप्ति के लिए, वश करने के लिए, धनप्राप्ति के लिए समाज अंधश्रद्धा के चंगुल में फँसता है, और अंधश्रद्धा की समस्या निर्माण हो जाती है।

"सूरज का सातवाँ घोडा" की जमुना भजन-कीर्तन, सत्संग आदि में रमने के कारण उसके घर में साधु-सन्तों का उठना-बैठना शुरू होता है। भोजन तक उन्हें जमुना के घर में मिलता है। वह यह "सन्तानवती भव" का आशीर्वाद पाने के लिए करती है। लेकिन सन्तान न होने से वह उदास रहती है। एक दिन जमुना अपने पति समवेत एक ज्योतिष के यहाँ जाती है और अपनी समस्या बताती है। तब ज्योतिषी ने उसे बताया कि - "कार्तिक-भर सुबह गंगा नहाकर चण्ड़ीदेवी को पीले फूल और ब्राम्हणों की चना, जौ और सोने का दान करना चाहिए।" [२२] जमुना ने इस कार्य को भी पूरा किया पर कुछ न हुआ तो रामधन ताँगेवाले ने उसे दूसरी कल्पना बताते हुए कहा - "जिस घोड़े के माथे पर सफेद तिलक हो, उसके अगले बायें पैर की घिसी हुई नाल चन्द्र-ग्राहण के समय अपने हाथ से निकालकर उसकी अँगूठी बनवाकर पहन ले तो सभी कामना पूरी हो जाती हैं।" [२३]

अंधश्रद्धा के मारे जमुना ज्योतिषी के कहने के अनुसार व्यवहार करती है पर उसे सन्तान प्राप्ति नहीं होती तो निराश जमुना को अंत में रामधन का सहारा लेना पड़ता है।

भारतीजी ने अपने दोनों उपन्यासों के पात्रोंद्वारा अंधश्रद्धा का पर्दापाश करने की कोशिश की है। समाज में प्रचलित इस अंधश्रद्धा के पिछे किसतरह अनैतिकता को बढ़ावा मिला है। यह दिखाने में भारती जी को सफलता मिली है।

निष्कर्ष :-

समस्याएँ अधिकांशतः सामाजिक क्षेत्र में जन्म लेती हैं और उनका संबंध अधिकतर नारी-जाति से ही होता है। विविध समस्याओं और कुप्रथाओं ने नारी-जाति को बड़ी हीनावस्था में पहुँचा दिया है। दहेज की समस्या ने पुत्री के जन्म को ही अप्रिय बना दिया है। बालविवाह से विधवा समस्या का जन्म हुआ। स्त्री की समाज में दयनीय स्थिति का कारण, जहाँ उसका स्त्री होना है, वहाँ इन समस्याओं के अभिशापों का उस पर लदना भी है। विधवा नारी के जीवन का कोई मूल्य नहीं होता। समाज की झुठी मर्यादायें उसे जीवन भर जलाती रहती है। उसे इन झुठी मान्यताओं की ही सीमाओं में बँधकर चलना होता है।

धर्मवीर भारतीजी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से विवाह को महत्त्व दिया है। उनके अनुसार विवाह समाज की एक अनिवार्यता है, समस्या नहीं, किन्तु समाज की परिस्थितियों ने इस अनिवार्यता को भी एक समस्या का रूप दे दिया है। वैवाहिक असंगतियों से समाज में अनेक प्रकार की कुरीतियाँ उत्पन्न होती है।

दहेज प्रथा से समाज की अन्य कुप्रथायें और समस्याएँ जन्म लेती है। अनमेल विवाह - वृद्ध विवाह - विधवा-समस्या प्रायः सभी समस्याओं के मूल में दहेज ही कुप्रथा है। दहेज के अभाव के कारण अयोग्य पति से शादी की जाती है। पति की जल्दी मृत्यु हो जाने के कारण यह नारी निराश होकर अनैतिकता का सहारा लेती है। नैतिकता का अर्थ है - हृदय की पवित्रता। समाजद्वारा बनाये नियमों के अनुसार आचरण करनेवाला

नैतिक है और उसके विपरित आचरण करनेवाले को अनैतिक कहकर उसकी भर्त्सना की जाती है।

धर्मवीर भारती के उपन्यासों के माध्यम से अंत में यह स्पष्ट होता है कि नारी प्राचीन काल से ही धर्म, रूढ़ी, परम्परा आदि बातों में फँसी हुआी है। भारतीय समाज-व्यवस्था का ही यह एक भीषण परिणाम है। जाति-व्यवस्था, धर्म-संस्कार, पुरूष का अहं, पुरूष की एकाधिकार की दृष्टि आदि के कारण नारी-जीवन हमेशा दुःखों, पीड़ाओं, व्यथाओं, बन्धनों एवं घुटन भरा हुआ है। इसी कारण पूरा नारी जीवन समस्या प्रधान बन चुका है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. डा.धर्मवीर भारती : "गुनाहों का देवता", पृ.१५७

२. वही : वही , पृ.२३९

३. डा.धर्मवीर भारती : "सूरज का सातवाँ घोडा", पृ.६८

४. डा.धर्मवीर भारती : "गुनाहों का देवता", पृ.२४३

५. डा.चंद्रभानु सोनवणे : "धर्मवीर भारती का साहित्य : सृजन के विविध रंग", पृ.१०८

६. डा.धर्मवीर भारती : "गुनाहों का देवता" , पृ.९०

७. डा.धर्मवीर भारती : "सूरज का सातवाँ घोडा" , पृ.२६

८. वही : वही, पृ.३९

९. डा.धर्मवीर भारती : "गुनाहों का देवता", पृ.२८

१०. वही : वही, पृ.८४

११. वही : वही, पृ.५२

१२. डा.धर्मवीर भारती : "सूरज का सातवाँ घोडा", पृ.२६

१३. डा.धर्मवीर भारती : "गुनाहों का देवता", पृ.१३९

१४. वही : वही,पृ.२५०

१५. डा.धर्मवीर भारती : "सूरज का सातवाँ घोडा", पृ.२९

१६. डा.धर्मवीर भारती : "गुनाहों का देवता", पृ.६०-६१

१७. शैल रस्तोगी : "हिंदी उपन्यासों में नारी", पृ.३२०

१८. डा.धर्मवीर भारती : "गुनाहों का देवता", पृ.३०३

१९. वही : वही, पृ.१०६

२०. डा.धर्मवीर भारती : "सूरज का सातवाँ घोडा", पृ.५८

२१. डा.धर्मवीर भारती : "गुनाहों का देवता", पृ.८०

२२. डा.धर्मवीर भारती : "सूरज का सातवाँ घोडा", पृ.४१

२३. वही : वही, पृ.४१

-०-०-०-०-